|| श्री 1008 आदिनाथाय नमः ||

मूलनायक श्री 1008 आदिनाथ भगवान

गुरु पूजा

रचयिता :

प.पू. सारस्वत कवि आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज

संकलन - श्रमण शुद्धोपयोगसागर

।। अनुक्रमणिका ।।

1.	श्री आदिनाथ पूजा अतिशय क्षेत्र मुंगाणा	1
2.	श्री आदिनाथ चालीसा	8
3.	श्री आदिनाथ आरती	11
4.	अन्देश्वर पार्श्वनाथ पूजा	13
3.	आचार्य श्री आदिसागर अंकलीकर गुरु पूजा	22
4.	श्री महावीरकीर्ति आचार्य गुरु पूजा	30
5.	श्री विमलसागर आचार्य गुरु पूजा	39
6.	श्री तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर गुरु पूजा	46
7.	श्री गणाचार्य विरागसागर गुरु पूजा	54
8.	श्री श्रमणाचार्य विभवसागर गुरु पूजा	69
9.	आरती सर्व साधु	75
10.	आरती – विभवसागर महाराज	76
11.	ऋद्धि मंत्र	77
12.	आचार्य शांतिधारा	80

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, मुंगाणा

आदिनाथ पूजन

(तूणक छन्द)

तर्ज-पार्श्वनाथ पूजा (नीर गंध अक्षतान्)
आइए! पधारिये! विराजिये, सुदेव जी।
आदिनाथ देव जी, सु आदिनाथ देव जी।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिन! अत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणम्।

गंगतीर नीर लाय, क्षीर सिन्धु क्षीर सा।
भावना समीर लाय, चित्त शुद्ध वीर सा।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाथ जलं नि. स्वाहा।

गंध क्या सुगन्ध है, कवित्व काव्य छन्द है।
चंदनादि द्रव्य क्या, चरित्र का प्रबंध है।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! भवाताप नाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

चेतना अखण्ड है, अमूर्त है अनंत है।
शक्ति रूप शुद्ध शान्त, ज्ञान दर्श वंत है।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

पुष्प है गुलाब का, सुभाव है गुलाब सा।
वीतराग देव दो, स्वभाव वीतराग सा।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

मिष्ठ अन्न मोदकं, प्रभावना प्रमोदकं।
शुद्ध व्यंजनादि ले, छुधादि रोग नाशंन।।

गुरु पूजा

आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

दीप आरती जला, समीप लाय हो भला।
मोह अंधकार मेट, देय ज्ञान की कला।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! मोहांधकार विनाशनय दीपं नि. स्वाहा।

कर्म को जलाइए, न कर्म आस-पास हो।
अष्ट कर्म नाश हो, सुसिद्ध लोक वास हो।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.स्वाहा।

आम, सेब, संतरा, सुपारियाँ भरे-भरे।
स्वर्ण थाल ये धरे, विशुद्ध भावना भरे।।

आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! मोक्ष फल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य हाथ ले, मनोज्ञ भाव साथ ले।
इष्ट देव पूजने, जिनेन्द्र भक्त ये चले।।
आदिनाथ आप हो, सहस्रनाम धार जी।
भक्ति भाव पूजता, जिनेन्द्र बार-बार जी।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा

अतिशयकारी आप हो, आदिनाथ भगवान।
मुंगाणा में राजते, देते सब वरदान।।
अतिशय क्या है क्षेत्र का, क्या है शुभ इतिहास।
जयमाला में गा रहा, भरे आत्म विश्वास।।

चौपाई छन्द

यह प्रतिमा कब कैसी आयी? अरे! बताओ कहाँ से पायी।
कब-कब कैसे अतिशय छाये? सुनकर समाधान हम पाये।।1।।

गाँव निकट इक नदिया बहती, "माही" नदिया जनता कहती।
जैसे माता हो जिनवाणी, वैसे देती सबको पानी।।2।।

एक समय की बात सुनाऊँ, इस प्रतिमा का राज सुनाऊँ।
सुनकर श्रद्धा ही जागेगी, पूजा करना आ जावेगी।।3।।

सच्ची घटना सुना रहा हूँ, हर्षभाव गुन-गुना रहा हूँ।
वैसा ही मन बना रहा हूँ, सुन दीवाली मना रहा हूँ।।4।।

संवत् उन्निस सौ तेतीसा, विक्रम संवत कहें मुनीशा।
तीन जनों को सपना आया, सुबह सभी ने सुना-सुनाया।।5।।

जैनी पन्नालाल कहाये, हुक्मीचन्द सदा शिर नाये।
परमानंद विप्र कहलाये, एक समान स्वप्न दरशाये।।6।।

सपने में जिन मूरत देखी, वीतराग की सूरत देखी।
जैनी प्रतिमा बुला रही है, निजानंद में झुला रही है।।7।।

"माही" नदिया पर तुम जाओ, और कालिया द्रह पर आओ।
बहता पानी घट जायेगा, मेरा रूप प्रगट आयेगा।।8।।

प्रात:काल पुण्यमय चर्चा, जिनमंदिर में करके अर्चा।
चले भक्तगण नदी किनारे, गूँज रहे थे जय-जयकारे।।9।।

ऊपर-ऊपर बहता पानी, जलधारा करता मनमानी।
सभी शांत हो वहाँ विराजे, बजने लगे खुशी के बाजे।।10।।

बहता पानी घटता जाये, अपना पुण्य प्रकटता आये।
पहला अचरज सपना आया, दूजा पानी घटता पाया।।11।।
तीजा स्वयं प्रकट हो आये, चौथा मुंगाणा ही आये।
अन्य जगह के लोग खड़े थे, बड़ी जगह के बड़े-बड़े थे।।12।।
जिनके सपने में आये हो, उनके भगवन्! कहलाये हो।
अतः आप मुंगाणा वाले, आदिनाथ सबके रखवाले।।13।।
बीस जैन घर मात्र यहाँ थे, देव शास्त्र गुरु भक्त सदा थे।
सबका पुण्य उदय में आया, आदिनाथ प्रभु तुमको पाया।।14।।
धन वैभव सुख सबने पाया, उच्च शिखर मंदिर बनवाया।
उन्निस सौ छियासठ संवत में, हुई प्रतिष्ठा नव मंदिर में।।15।।
हुआ पंचकल्याणक भाई, मूल जगह मूरत पधरायी।
जब से यह सम्मान दिया है, तब से ही वरदान लिया है।।16।।
ऊँचे को ऊँचा बैठाओ, दो सम्मान सदा सुख पाओ।
ऐसा पाठ यहाँ पर सीखो, और अनेकों अचरच देखो।।17।।
इक रात्रि में भजन सुनाते, बैठे आकर भक्त यहाँ के।
तभी देख भारी उजियारा, दैविक चमत्कार सुख वाला।।18।।
ठाकुर केशरसिंह जी आये, चमत्कार हम देख न पाये।
एक बार फिर हमें दिखाओ, अपनी महिमा हमें बताओ।।19।।
तत्क्षण चमत्कार सब देखा, अतिशयकारी प्रभु को लेखा।
कभी सुने हैं जय-जयकारे, कभी मँजीरा, ढोल नगारे।।20।।

महावीर कीर्ति गुरु आये, बीस दिवस तक दर्श दिखाये।
प्रवचन सभा हुई मनहारी, अष्टादश भाषा अधिकारी।।21।।
बोले पंच मुनीश्वर प्यारे, सुनो दयालु देव हमारे।
हमें आप सन्मार्ग दिखाओ, भली सला दे भला कराओ।।22।।
गुरु बोले तुम सब कल आना, बात कहूँगा परम प्रमाणा।
दूजे दिवस पंच गण बोले, तब गुरुवर अपना मुख खोले।23।।
श्याम वर्ण तीनों प्रतिमायें, गर्भालय में ही पधरायें।
तभी भला होगा यह जानो, आज नहीं तो कल कर मानो।।24।।
उनके ही जब शिष्य पधारे, वर्द्धमान सागर गुरु न्यारे।
पार्श्वनाथ शास्त्री जी आये, करी प्रतिष्ठा सब सुख पाये।।25।।
तब से सन्त समागम पाया, विमल भरत सन्मति गुरुराया।
धर्म अजित श्री वर्द्धमान जी, अभिनंदन सागर महाराज जी।।26।।
कनकनंदि आनंद प्रदाता, सुनीलसागर प्राकृत ज्ञाता।
फिर आचार्य विभव गुरु आये, चतुर्मास रच पूजा गाये।।27।।
दो हजार ईसा इक्कीसा, पूजा कीनी आदि जिनेशा।
इक सौ चालिस बरस कहानी, सुनो भक्त जन परम प्रमानी।।28।।

दोहा यह जयमाला आपकी, आदिनाथ भगवान।
यह मुंगाणा क्षेत्र जी, अतिशय करें प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

आदिनाथ चालीसा

दोहा

आदिनाथ भगवान को, नमन अनंतो बार।
भक्ति भाव से मैं रचूँ, चालीसा श्रुतसार।।

चौपाई

ऋषभदेव यह नाम कहाया, ऋषभनाथ भी श्रुत में गाया।
हुए प्रथम तीर्थंकर स्वामी, आदिनाथ सादर प्रणमामि।।1।।
श्री सर्वार्थसिद्धि से आये, नगर अयोध्या धन्य कहाये।
नाभिराय कुलकर मनु प्यारे, भोगें भोग भूमि सुख न्यारे।।2।।
मरुदेवी जिनकी शुभ रानी, शील सम्पदा गुण की खानि।
जग जननी जिनमाता जानो, सुर पूजित प्रभुमाता मानो।।3।।
इक्ष्वाकु शुभ वंश कहाये, शोभनीय प्रशंस कहाये।
जब आषाण वदी दो आयी, गर्भोत्सव की खुशियाँ लायी।।4।।
उत्तराषाढ़ श्रेष्ठ नक्षत्रा, हुआ गर्भ कल्याण पवित्रा।
होती रही रतन की वर्षा, पन्द्रह महिने हरषा-हरषा।।5।।
चैत्र वदी नवमी तिथि आयी, हुआ जन्म कल्याणक भाई।
तप्त स्वर्ण सी दमके काया, बाल रूप सबके मन भाया।।6।।
धनुष पाँच सौ तन ऊँचाई, सब शास्त्रों में लिखी लिखाई।
आठ वर्ष में अणुव्रत धारे, भव-भव के संस्कार तुम्हारे।।7।।

सकल राज सुख तुमने पाया, चरित मोह–वश ब्याह रचाया।
इन्द्रराज ने रीति निभाई, परिणय परम्परा चल आयी।।8।।
नंदा और सुनंदा देवी, ऋषभराज की आज्ञा सेवी।
भरत और बाहुबली जानों, दोनों पुत्र आपके मानों।।9।।
ब्राह्मी और सुन्दरी गायीं, श्रेष्ठ पुत्रियाँ जग यश पायीं।
तेरासी लख पूरव बीते, मोक्षमार्ग बिन रीते–रीते।।10।।
राज सभा में नृत्य दिखायें, नील–अंजना मरण सिधाये।
तत्क्षण आत्म बोध मन जागा, दृढ़ वैराग्य हुआ श्रुत पागा।।11।।
लौकांतिक सुरगण तब आये, बहुत–बहुत संस्तुतियाँ गाये।
धन्य–धन्य प्रभु विचार आये, जैन धर्म तुमसे चल पाये।।12।।
मोक्षमहल का द्वार खुलेगा, जैन तीर्थ भी सदा चलेगा।
चक्रेश्वरी यक्षिणी माता, यक्ष नाम गौवदन कहाता।।13।।
उत्तराषाढ़ श्रेष्ठ नक्षत्रा, हुए पंचकल्याणक पवित्रा।
चैत्र वदी नवमी तिथि आयी, केशलोंच कर तपधर भाई।।14।।
आप स्वयंभू आत्म गुरु हैं, बिना गुरु के आप गुरु हैं।
स्वतः ज्ञान जो प्रकट हुआ है, यह तप का फल उदित हुआ है।।15।।
अन्य गुरु न जिनके होते, जगत गुरु वे खुद ही होते।
अतः स्वयंभू आप कहाते, तीर्थंकर हो तीर्थ चलाते।।16।।
दीक्षावन सिद्धार्थ कहाया, दीक्षातरु वट वृक्ष सुहाया।
दीक्षाथल प्रयागराज है, मंगल करता सभी काज है।।17।।

परम दिगम्बर मुद्रा धारी, यथाजात शिशुवत् अविकारी।
श्रमण वातरसना ऋषि योगी, हो अवधूत आत्म सुख भोगी।।18।।
आदि ब्रह्म आदिम तीर्थंकर, विश्व शान्ति कारक तुम शंकर।
फाल्गुन वदी ग्यारसी आयी, हुआ ज्ञान कल्याणक भाई।।19।।
समवशरण देवेन्द्र रचाये, धर्म तीर्थ को आप चलाये।
तीर्थंकर कर्मोदय आया, पुण्य फला पद तुमने पाया।।20।।
सात तत्त्व छह द्रव्य बताये, नौ पदार्थ भी तुमने गाये।
क्षमा धर्म आभूषण गाया, हर दिन ही पर्यूषण आया।।21।।
देवों ने जयकार लगाई, जय जय, जय जय हो जिनरायी।
माघ वदी चौदस शुभकारी, पायी मुक्ति दशा अविकारी।।22।।

दोहा

आदिनाथ भगवान का, चालीसा सुखकार।
भक्ति भाव से नित पढ़ो, पाओ सौख्य अपार।।

जापमंत्र – ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मुंगाणा
आदिनाथ आरती

भक्ति आरती, नृत्य आरती, आदिनाथ! आदिनाथ! आदिनाथ की।
रत्न आरती, स्वर्ण आरती, आदिनाथ, आदिनाथ आदिनाथ की।।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,
मुंगाणा वाले बाबा आदिनाथ की।

भक्ति आरती, नृत्य आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।।
रत्न आरती, स्वर्ण आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।

नाभिराय के पुत्र रत्न हे,
मात मरुदेवी लाल आदिनाथ की।

भक्ति आरती, नृत्य आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।।
रत्न आरती, स्वर्ण आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।।

अवधपुरी में जन्म लिया है,
अष्टापद निर्वाण धाम की।

भक्ति आरती, नृत्य आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।।
रत्न आरती, स्वर्ण आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।।

नमस्कार में चमत्कार है,
अतिशयकारी देव आदिनाथ की।

भक्ति आरती, नृत्य आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।।
रत्न आरती, स्वर्ण आरती, आदिनाथ! आदिनाथ!! आदिनाथ की।।

अन्देश्वर पार्श्वनाथ भगवान

अन्देश्वर पार्श्वनाथ पूजा

स्थापना

जय अन्देश्वर! जय पार्श्वनाथ! जय तीर्थक्षेत्र अतिशयकारी।
जय तीर्थेश्वर! जय तीर्थ नाथ! जय भक्तेश्वर मंगलकारी।।
जय-जय जिनेन्द्र! नमते सुरेन्द्र! शत इन्द्र वृन्द, श्रद्धाधारी।
जय क्षमामूर्ति! उपसर्ग जयी! जय पार्श्वनाथ! संकट हारी।।

आओ-आओ, ठहरो-ठहरो, मम हृदय विराजो हे प्रभुवर!
ध्याऊँ-ध्याऊँ, गाऊँ-गाऊँ, मैं हर्ष मनाऊँ गुण गाकर।।
मेरा सौभाग्य उदय आया, आमंत्रण मेरा स्वीकारा।
मेरे जीवन का उत्सव, यह लूटूँ आनंद यहाँ सारा।।

ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिन! अत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जल)

जल के बादल, जल के सागर, जल की नदियाँ कल-कल बहतीं।
जल के झरनें, जल के पर्वत, जल की कुहियाँ जल-जल कहतीं।।
जल जीवन है, जीवन सा जल, हे जलधर आ बरसा कर दे।
दो बूँदे मैं अर्पण कर लूँ, जल से कलशा मेरा भर दे।।

ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(चन्दन)

चन्दन वन्दन में ले आया, चन्दन सा शीतल हो जाऊँ।
निज शान्ति जगे मुझमें भगवन्! भव-भव का ताप मिटा पाऊँ।।
सब की पीड़ा मेरी पीड़ा, जब से यह मैंने माना है।
तब से ही मेरा ताप मिटा, चरणों भव ताप मिटाना है।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! भवताप नाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

(अक्षत)

अक्षत सा मेरा ये प्रयास, अक्षय पद का अभिलाषी है।
अक्षय श्रद्धा के देव आप, आतम अक्षय विश्वासी है।।
जो हुआ नहीं वह अब होगा, यह दृढ़ विश्वास हमारा है।
जो निज स्वभाव से प्रकटेगा, उस पर अधिकार हमारा है।।
ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्प)

अन्दर में गंध समायी है, सो बाहर में सुरभायी है।
भौरों का इन पर मडराना, यह फूलों की अच्छाई है।।
यह फूल चढ़ाकर नाथ तुम्हें, अपना रहस्य प्रकटाता हूँ।
तुम बाल ब्रह्मचारी प्रभुवर! तेरे चरणों शिर नाता हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(नैवेद्य)

पूजा तो जिनवर गुण गाना, पूजा तो जिन महिमा वर्णन।
पूजा तो जिन गुण दर्शन है, जो प्रकटाती सम्यग्दर्शन।।
पूजा में सम्यग्ज्ञान भरा, पूजा से चारित आता है।
जिन पूजा करने वाला ही, जिननाथ स्वयं बन जाता है।।

ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दीप)

जो कुछ पाने घर से निकला, जो कुछ पाने मंदिर आया।
जो कुछ पाने की आस जगी, वो अन्देश्वर में सब पाया।।
चरणों में दीप जलाकर के, मैं अन्तर दीप जलाता हूँ।
जय अन्देश्वर, जय पार्श्वनाथ, कैवल्य आरती गाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(धूप)

जितना ठहरो उतना सुख है, जितना आओ उतना उत्तम।
जितना ध्याओ, अन्देश्वर को, जितना पूजो वह सर्वोत्तम।।
अन्देश्वर के अन्दर आओ, है नंदनवन सी हरियाली।
सुरभित हो दिशा महकती हैं, देवों ने धूप जला डाली।।

ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धपूं निर्वपामीति स्वाहा।

(फल)

फल की महिमा फल की गरिमा, शिवफल पाने में अधिकाई।
चारित्र वृक्ष का उत्तम फल, है मोक्ष महाफल सुखदायी।।
मैं मोक्ष महाफल पाने को, पारस अन्देश्वर आया हूँ।
ये सेव संतरा श्रीफल के, शुभ मंगल थाल सजाया हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! मोक्ष फल प्राप्तये फलानि निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घ)

सबके अन्दर में ईश्वर है, कहता पारस अन्देश्वर है।
मैं भी अन्दर से प्रगटा हूँ, तेरे अन्दर भी ईश्वर है।।
अन्दर का ईश जगाने को, पारस अन्देश्वर आया हूँ।
तुम सा अनर्घ पद पाने को, यह अर्घ चढ़ाने लाया हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री अन्देश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय! अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – श्री अन्देश्वर पार्श्व को, आतम अन्दर धार।
जयमाला मैं गा रहा, महिमा अपरम्पार।।

चौपाई

जय अन्देश्वर पार्श्वनाथ की, जय भक्तेश्वर पार्श्वनाथ की।
जय तीर्थेश्वर पार्श्वनाथ की, जय परमेश्वर पार्श्वनाथ की।।1।।

प्यारा भारतवर्ष हमारा, राजस्थान में तीरथ प्यारा।
अन्देश्वर का देख नजारा, बोल उठे मन जय–जयकारा।।2।।

वाह! वाह! यह बागड़ देखो, मंगल रूप कुशलगढ़ देखो।
सभी कुशलताऐं पाओगे, श्रेष्ठ सफलताऐं पाओगे।।3।।

वागुल आ अन्देश्वर आओ, पार्श्वनाथ के दर्शन पाओ।
अपने में अतिशय प्रकटाओ, बिन माँगे वांछित फल पाओ।।4।।

देखो–देखो रम्य पहाड़ी, पहन रखी हरियाली साड़ी।
नंदन वन सी छटा निराली, रोज दशहरा रोज दिवाली।।5।।

देखो–देखो वृक्षावलियाँ, कूँज रहीं, उन पर कोयलियाँ।
चारों ओर चहकतीं चिड़ियाँ, चौबीसी की सुन्दर मढ़ियाँ।।6।।

अम्बर चूँमे जहाँ जिनालय, मात्र दिगम्बर चैत्य–चैत्यालय।
स्वर्ण कलश से दमक रहे हैं, चम–चम–चम–चम चमक रहे हैं।।7।।

जल से भरा जलाशय प्यारा, पुण्य प्रकृति का दिखे नजरा।
ले पवित्र जल कर लो धारा, धुल जायेगा पाप तुम्हारा।।8।।

निर्जन शान्त अरण्य निहारो, पारसनाथ शरण्य पधारो।
जिसने पार्श्वनाथ को देखा, बदली उसकी जीवन रेखा।।9।।

अपनी किस्मत यहाँ जगाओ, सभी समस्या दूर भगाओ।
यदि अन्देश्वर आ जाओगे, आत्म शान्ति को पा जाओगे।।10।।

ऐसा मैंने अनुभव कीना, जब से यहाँ दरश कर लीना।
मुकुट सप्तमी जब तिथि आई, पार्श्वनाथ ने मुक्ति पाई।।11।।

भक्त विभव ने पूजा गायी, सब ने मिल जयकार लगायी।
चमत्कार यदि सुनना चाहो, प्रभु के अतिशय गुनना चाहो।।12।।

चमत्कार कुछ गिना रहा हूँ, अतिशय महिमा सुना रहा हूँ।
चोरी करने चोर पधारे, खोल तिजोरी ले भंडारे।।13।।

मंदिर बाहर ना जा पाये, नयनों में अंधेरा छाये।
अतः सभी भंडारा छोड़े, पार्श्व प्रभु को दो कर जोड़े।।14।।

रक्षा करो नाथ अब मेरी, मिले दृष्टि प्रभु मुझको मेरी।
पारस प्रभु से अरज लगाई, अपनी दृष्टि वापिस पाई।।15।।

ऐसे अतिशय होते रहते, भक्तों के दुःख खोते रहते।
अन्देश्वर को जो आराधा, दूर हुई उसकी सब बाधा।।16।।

इक किसान हल जोत रहा था, श्रम से किस्मत खोल रहा था।
हल जोतत प्रभु आप मिले थे, उस किसान के भाग्य खुले थे।।17।।

धरती अन्दर ईश्वर पाये, अतः नाम अन्देश्वर गाये।
अपनी विधि से तुमको पूजे, ढोल मजीरा बाजा गूँजे।।18।।

एक रात की बात सुहानी, अन्देश्वर की श्रेष्ठ कहानी।
ग्राम कलिंजरा जैनी भाई, भीमचंद के सपने आयी।।19।।

चार मील पूरब में जाओ, निर्जन वन में दर्शन पाओ।
पारस प्रभुवर वहाँ मिलेंगे, अखियाँ खोलो भाग्य खुलेंगे।।20।।

स्वप्न काल जो दृश्य दिखाये, जगने पर सब सचमुच पाये।
भीमचंद जी चले वहाँ पे, मेरे पारस प्रगट जहाँ पे।।21।।

अतिशयकारी मूरत देखी, पारस प्रभु की सूरत देखी।
रंग–बिरंगे रंग हटाये, सहज रूप लखकर हरषाये।।22।।

समाचार उस दिन से फैला, लगने लगा भक्त जन मेला।
पंच कुशलगढ़ आन पधारे, दे दो ये भगवान हमारे।।23।।

वे किसान भाई सब आये, एक विनय अपनी मन लाये।
यही बना लो मंदिर मढ़िया, यही काम है सबसे बढ़िया ।।24।।

अतः वहीं कुटिया बनवायी, सब बोले ब बनवायी।
भट्टारक जी यहाँ पधारे, चलो सागवाड़ा प्रभु प्यारे।।25।।

गाड़ी में बैठायी प्रतिमा, अब देखो प्रभुवर की महिमा।
उसी रात में सपने आते, यह प्रतिमा तुम क्यों ले जाते।।26।।

संकट में जो निकट सहारे, वे पारस भू प्रकट हमारे।
अरे वही मंदिर बनवाओ, और प्रतिष्ठा भव्य कराओ।।27।।

अतः आपको वापिस लाये, अन्देश्वर मंदिर बनवाये।
हुआ पंचकल्याणक महोत्सव, सभी जगह पर उत्सव–उत्सव।।28।।

तब से अतिशय क्षेत्र कहाया, पार्श्वनाथ अंदेश्वर गाया।
जैसी महिमा सुनी–सुनायी, वैसी पूजा यह रच गायी।।29।।

सर्व दिशा में ध्वज फहरायें, आमंत्रण दे हमें बुलायें।
जो पूजेगा वही पुजेगा, जो आयेगा वह पायेगा।।30।।

इष्ट अबाधित जो असिद्ध हो, सभी कार्य वह यहाँ सिद्ध हो
जो पूजे वह भी प्रसिद्ध हो, अंत समय मुख सिद्ध–सिद्ध हो।31।।

दोहा

अतिशय गाये आपके, अतिशयकारी नाथ।
जय अन्देश्वर तीर्थ जी, जय हो पारसनाथ।।

ॐ ह्रीं श्री अंधेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

दर्शन पाय महान, अन्देश्वर में आयके।
मैं पूजूँ भगवान, पारस पूजा गायके।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

रचयिता – आ. विभवसागर

प.पू. श्रमण चक्रवर्ती मुनि कुञ्जर
आचार्य 108 श्री आदिसागर जी अंकलीकर

आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर

गुरु पूजा

(तर्ज – तेरी छत्रच्छाया)

स्थापना

परम्परा के गणनायक श्री, आदि सिन्धु जय हो।
आप अंकलीकर कहलाये, जन्म अंकली हो।।
स्वयं विरागी गुणानुरागी, कितने बड़भागी।
आदि सिन्धु की पूजा करने, भक्त लगन लागी।।

आओ–आओ बुला रहें हैं, मन मंदिर आओ।
दर्शन देकर भक्तजनों के, निज मन हरषाओ।।
गुरु पूजा सम्यग्दर्शन दे, ज्ञान कला देती।
गुरु पूजा सम्यक् चारित दे, सभी भला देती।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं आचार्य आदिसागर मुनिवर अत्र अवतर–अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

श्रमण गंग के आप स्रोत हो, जय भागीरथ हो।
इति नहीं है जिस कारज का, उसके तुम अथ हो।।

पद प्रक्षालन को निर्मल जल, गुरुवर मैं लाऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ॥

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राष्ट्र हमारा महक रहा है, चारित चंदन से।
सच्चरित्र की गंध उठी है, अक्कानंदन से॥
सिद्ध पुत्र के पद वंदन को, यह चंदन लाऊँ॥
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ॥

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय आतम धन पहचाना, अक्षय सुख खोजा।
अक्षय पद के महापुजारी, की अक्षत पूजा॥
तेरे पद अक्षय पद पाने, शुभ अक्षत लाऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ॥

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण सूर्य गुरुदेव आपसे, अगणित कमल खिले।
किन्तु कभी भी ना मुरझाये, शाश्वत सुमन भले॥

गुरु पूजा

गुण किरणों से कमल खिलाते, खिले कमल लाऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

अपना दीपक स्वयं जलाया, हे अखण्ड ज्योति।
अपना लोटा छानो भैया, दिये ज्ञान मोती।।
तेरी लौं से अपना चिन्मय, दीपक जलवाऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सात दिवस में एक दिवस ही, कर आहार चर्या।
एक वस्तु भिक्षा में लेते, अद्भुत तप किरिया।।
क्षुधा वेदना रोग मिटाने, शुभ व्यंजन लाऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप निज में प्रकटाने, कितनी धूप सही।
इसीलिए तो तेरे जैसा, दूजा रूप नहीं।।

महातपस्वी! मलयाचल की, धूप चरण लाऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्प वृक्ष तुम! कामधेनु तुम, तुम चिंतामणि हो।
रत्नत्रय फल देने वाले, तुम चेतनमणि हो।।
शिव फल पाने शिवगौणा पद, श्री फल मैं लाऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरु पूजा गाऊँ।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

अष्ट द्रव्य का थाल सजाया, पूजा को लाया।
जैसा भाया वैसा पाया, धर्मभाव ध्याया।।
परम्परा के आदि प्रवर्तक, चरण कमल ध्याऊँ।
आदि सागर अंकलीकर की, गुरुपूजा गाऊँ।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

आदि सिन्धु की ज्योति से, ज्योतिर्मय संसार।
जयमाला गा आपकी, प्रकटे पंचाचार।।

चौपाई

ग्राम अंकली जन्म लिया है, अक्का माँ को धन्य किया है।
पिता सिद्ध गौणा कहलाये, शिवगौणा सुत तुम कहलाये।।1।।
पूरे भारत वर्ष के अन्दर, ग्राम अंकली सबसे सुन्दर।
सभी ग्राम जन शाकाहारी, नहीं एक भी मांसाहारी।।2।।
होटल में केलाबण्डा हैं, नहीं कहीं मुर्गी–अण्डा हैं।
यह पवित्रतम पावन नगरी, यहाँ सुखी है जनता सगरी।।3।।
मैंने देखा गाँव अनौखा, सबसे सुन्दर सबसे चोखा।
घर–घर लगते मुनि का चौका, मिलता सबको पावन मौका।।4।।
एक मात्र यह गाँव निराला, जो सर्वाधिक जैनों वाला।
जैन जैन बस जैन जहाँ है, आत्म चैन बस चैन जहाँ।।5।।
अट्ठारह सौ छ्यासठ जानो, चार सितम्बर महिना मानो।
भाद्र शुक्ल चौथी तिथि आयी, ग्राम अंकली खुशियाँ छायी।।6।।
ग्राम नाँदनी मठ है प्यारा, श्री जिनसेन सूरि का न्यारा।
क्षेत्र नाँदनी तुमको प्यारा, क्षुल्लक दीक्षा का व्रत धारा।।7।।

भट्टारक जिनसेन कहाये, ग्राम नाँदनी मठ में आये।
जैन धर्म का केन्द्र बनाये, गाँव सात सौ एक कराये।।9।।
दही गाँव शुभ गाँव कहाया, अतिशय क्षेत्र सदा मन भाया।
ऐलक दीक्षा तुमने धारी, जय-जय-जय गुरुदेव तुम्हारी।।8।।
सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि जानो, महाराष्ट्र का तीरथ मानो।
देश और कुलभूषण स्वामी, उनके चरणों कर प्रणमामि।।10।।
निर्मल मन से उनको ध्याया, वेष दिगम्बर उनसा पाया।
मुनि दीक्षा यह तुमने धारी, आदि सिन्धु मुनिवर हितकारी।।11।।
तुम आध्यात्मिक संत निराले, आत्म साधना के रखवाले।
सात दिवस के अन्तराल से, भिक्षा लेते दोष टाल के।।12।।
ऐनापुर जैनापुर जानो, कोल्हापुर कोनूर भी मानो।
क्षेत्र नाँदनी और सांगली, चातुर्मास उदगाँव कोथली।।13।।
आप स्वयं दीक्षित गुरु न्यारे, निज प्रेरणा से दीक्षा धारे।
पहले मुनिवर आप कहाये, मुनि कुंजर भी तुम कहलाये।।14।।
परम्परा आचार्य हमारे, आदि सिन्धु हो तारणहारे।
आज आपकी परम्परा में, हम दीक्षित सौभाग्य हमारे।।15।।
महावीर कीर्ति मुनि प्यारे, शिष्यराज सर्वोत्तम न्यारे।
परम्परा के संवर्द्धक थे, आर्षमार्ग के संरक्षक थे।।16।।

तीर्थ शिरोमणि तीर्थ भक्त थे, चंदा-चिट्ठा से विरक्त थे।
अष्टादश भाषा विज्ञानी, जिनसे परम्परा हुई ज्ञानी।।16।।
विमल कुंथु सन्मति औ संभव, करे असंभव सब कुछ संभव।
वात्सल्य रत्नाकर जानो, विमल सिन्धु शुभ नाम वखानो।।17।।
तप सम्राट तपस्वी देखा, चौथे युग सा संत अनौखा।
सन्मति सागर नाम कहाये, परम्परा को खूब बढ़ाये।।18।।
विमल सिन्धु का कुल उजियारा, विराग सागर मुनि ध्रुव तारा।
उनका शिष्य विभव सागर हूँ, मैं अनगार श्रमण गणधर हूँ।।19।।
भक्ति भाव से पूजा गायी, परम्परा से जो चल आयी।
मैंने भाव समर्पण कीने, गुरु पूजाकर आनंद लीने।।20।।

दोहा- आदि सिन्धु की ज्योति से, ज्योर्तिमय संसार।
श्रमण पितामह आप हो, इस युग के आधार।।
गुफा कन्दरा में बसे, निर्जन वन में ध्यान।
निज आतम में खोजते, आदि सिन्धु भगवान।।
जयमाला गा आपकी, हुआ धन्य मैं आज।
आत्म विभव मुझको मिले, आदि सिन्धु मुनिराज।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी आदिसागर मुनिवरेभ्यो जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्पांजलि।।

प.पू. तीर्थभक्त शिरोमणि समाधि सम्राट 108

श्री महावीरकीर्ति जी महाराज

तीर्थ भक्त शिरोमणि समाधि सम्राट, अष्टादश भाषी

आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी महाराज

साधुराज आइए, सु–साधुराज आइए।
मुक्तिपंथ पे चलूँ, सुपंथ में लगाइए।।
वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवर! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

ज्ञान ध्यान लीन आप, पंच पाप हीन हो।
गंगनीर के समान, शुद्ध स्वात्मलीन हो।।
वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ति गंध आपकी, दशों दिश फैल रही।
कान–कान जायके, सुधा–सुधा घोल रही।।

वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान के समान, शुक्ल शालि तंदुलम्।
शुक्ल ध्यान पावने, विशुद्ध भाव पूजनम्।।
वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल हैं खिले–खिले, विनम्र भाव में पले।
फूल से ही भक्तराज, भक्ति में रले–पिले।।
वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

भूख रोग के समान, सर्व पाप खान है।
अर्चना मुनीन्द्र को, अमोघ ही निदान है।।

वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप आप हो, सु-ज्ञान का प्रकाश दो।
पाप अंधकार नाश, चेतना विकास दो।।
वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप आग में जले, सुधूम ऊपरी चले।
भव्य जीव आय हैं, सुपूज कर्म ये जले।।
वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि शोभितं, अनार आम्र मोहितं।
लाइए इलायची, सुमोक्ष मंगलीकरम्।।

वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।
ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन ऊन कोटि नौ मुनीश–पाद शीष नाय।
अष्ट द्रव्य को मिलाय, अर्घ्य भाव से चढ़ाय।।
वीतराग सन्त आप, वीतरागता भरें।
पूज्यपाद पूजने, सुभक्त अर्चना करें।।
ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जन्म भूमि है आपकी, नगर फिरोजाबाद।
तीन मई उन्नीस सौ, दस रखते हम याद।।1।।

बूँदादेवी मात हैं, पद्मावती पुरवाल।
जिनने भारत को दिया, अपना प्यारा लाल।।2।।

रतनलाल के रत्न ने, रत्नत्रय को धार।
पद बिहार से कर दिया, सब जग का उद्धार।।3।।

पढ़े पाठशाला सदा, जिनमंदिर में जाय।
नगर फिरोजाबाद के, रत्न चंद गुरु पाय।।4।।

कभी मुरैना में पढ़े, फिर व्यावर, इन्दौर।
न्याय तीर्थ शिक्षा मिली, विद्यावस्था दौर।।5।।

संस्कृत, प्राकृत बोलते, तमिल तेलगू भाष।
अंग्रेजी हिन्दी सरल, उर्दू, कन्नड खास।।6।।

क्षुल्लक दीक्षा के गुरु, चन्द्र सिन्धु मुनिराज।
टाकाटोंका ग्राम में, देखे सकल समाज।।7।।

सन् उन्नीस सौ साथ में, ऊपर तेतालीस।
अंकलीक आचार्य से, दीक्षा धरी मुनीश।।8।।

कटनी मंदिर में हुआ, चेतन कृत उपसर्ग।
एक सर्प अँगुली दवा, करे विघ्न का वर्ग।।9।।

यदि बैर तो देर क्यों, बैर नहीं क्यों देर।
विषधर से बोले गुरु, सामायिक की वेर।।10।।

पद विहार क्षण राह में, हुआ बड़ा उपसर्ग।
सही लाठियाँ आपने, धर समता का सर्ग।।11।।

महावीर भगवान हैं, महावीर गुरु गान।
महावीर भगवान से, उपकारी गुरु जान।।12।।

आदि सिन्धु की ज्योति से, ज्योतिर्मय संसार।
चरण युगल मैं पूजता, प्रकटे पंचाचार।।13।।

वीर हिमाचल से प्रगट, श्रमण गंग के स्रोत।
भारत भर में बह रहे, गुण जल ओत-प्रोत।।14।।

महावीर भगवान की, प्रति मूर्ति महावीर।
गुरु पूजा कर आपकी, आ प्रकटें महावीर।।15।।

गिरि सम्मेद में तब हुआ, वह पहला जल कूप।
जहाँ गुरुवर आपने, सही जेठ की धूप।।16।।

तेरे श्रम की बूँद से, वहा स्वेद का नीर
सर्वोषधियाँ बन गया, मधुवन हरता पीर।।17।।

प्रभु सत् युग के वीर हो, गुरु कलयुग के वीर।।
दोनों ही महावीर हो, दोनों हरते पीर।।18।।

मेरे गुरु मेरे प्रभु, मेरे गुरु भगवान।
सबसे पहले मैं करूँ, श्री गुरुवर का ध्यान।।19।।

मिले गुरु का नेह तो, मिले प्रभु का गेह।
अगर देह में गुरु बसें, होता देह विदेह।।20।।

महावीर भगवान की, प्रति मूर्ति महावीर।
दोनों ही महावीर हो, दोनों दे दो धीर।।21।।

गुरु खुश तो भगवान खुश, गुरु पास भगवान।
गुरु बुलाते आइए, दर्शन दें भगवान।।22।।

कितने अतिशय आपके, सब अतिशय के धाम।
महावीर कीर्ति गुरु, बारम्बार प्रणाम।।23।।

बँधा क्षेत्र का वह कुआँ, तेरे तप का दान।
तब से अब तक दे रहा, मीठे जल का दान।।24।।

गौतम गणधर कूट पर, रैन बिताई आप।
समता धर ऐसे खड़े, निष्कषाय निष्पाप।।25।।

रहे आतम निर्भर सदा, स्वाभिमान के साथ।
ना फैलाये हाथ दो, सबके शिर पर हाथ।।26।।

तीर्थ भक्त तुमने किए, तीरथ चातुर्मास।
गजपंथा गिरनार में, बड़बानी में वास।।27।।

सम्मेदाचल पर आपने, कीने चातुर्मास।
अन्य तीर्थ करते रहे, शीत-ग्रीष्म के वास।।28।।
मंत्र-तंत्र ज्योतिष विधा, वैद्याचार्य महान।
मांत्रिक-तांत्रिक आप थे, था निमित्त का ज्ञान।।29।।
अष्टादश भाषी निपुण, थे समाधि सम्राट।
वीर सिन्धु सल्लेखना, दिया विनय का पाठ।।30।।
शिष्य अनेकानेक हैं, विद्या विशद प्रवीण।
कुन्थु, विमल, सन्मति गुरु, संभव निज में लीन।।31।।
गणधर सूरि पाठका, संघ प्रवर्तक चार।
और स्थविर पद दिया, जैनागम अनुसार।।32।।
मूलाचारी आप थे, समयासारी आप।
प्रवचनसारी आप थे, योगसारी आप।।33।।
गुरु शिक्षायें आपकी, मिली मुझे अनमोल।
अपना लोटा छानिये, सबसे मीठा बोल।।34।।
पहला पद अरिहंत का, दूजा सिद्ध अपाप।
तीजा पद पूजत मिले, दूजा आपने आप।।35।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी महावीरकीर्ति मुनिवरेभ्यो जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। पुष्पांजलि।।

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री 108

विमलसागरजी महाराज

वात्सल्य रत्नाकर, निमित्तज्ञानी आचार्य विमलसागर

गुरुपूजा

दोहा–

आह्वानन गुरुदेव का, भक्ति भाव के साथ।
कोटि–कोटि वन्दन करूँ, झुका–झुका कर माथ।।
श्री गुरुवर जी आइए, पूजा करता आज।
निमित्तज्ञानी आप हो, विमल सागर महाराज।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ:ठ: स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल से शीतल गुरु की वाणी, हम जल क्या लायें।
गंगा जल सम गुरु वचनों में, निज मन नहलायें।।
भक्ति भाव से ओत–प्रोत मन, यह श्रद्धा जल लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित चंदन तरुवर तुम हो, चंदन क्या लायें।
चारित दाता से चारित पा, चेतन महकायें।।
पंचम चारित पाने गुरुवर, चंदन अर्पित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय तप के हो भण्डारी, विमल विहारी हो।
दुखियों के दुख हरने वाले, करुणाधारी हो।।
अक्षय पद दाता गुरु चरणों, अक्षत अर्पित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुख को पाकर जो ना फूले, जो ना दुखी हुये।
उनके चरणों फूल चढ़ा हम, कितने सुखी हुए।।
पुष्प सुकोमल गुरुवर पद में, पुष्प समर्पित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम रोगी हैं वैद्य आप हो, चर्या औषधि है।
गुरु चरणों की पावन पदरज, ही सर्वोषधि है।।
क्षुधा वेदना रोग मिटाने, व्यंजन अर्पित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु ने सम्यक् दीप जलाया, ज्ञान ज्योति जारी।
मोक्षमार्ग को किया प्रकाशित, मोह तिमिर हारी।।
केवलज्ञान कला प्रकटाने, दीप समर्पित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जितनी धूप सही गुरुवर ने, तरुवर के जैसी।
उतनी छाया मिली जगत को, पंथी तुरुवर सी।।
आठों कर्म जलाने गुरुवर, धूप समर्पित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष हो कामधेनु हो, या चिन्तामणि हो।
अचिन्त्य फल को देने वाले, गुरु चेतनमणि हो।।
महामोक्ष फल पाने गुरुवर, श्री फल अर्पित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य रत्नाकर गुरुवर! हे निमित्त ज्ञानी।
पूज्य विमल सागर जी ऋषिवर! हे संयम दानी।।
अर्घ समर्पण करने आया, गुरुणां गुरुवर को।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

गुरु दर्श मिले मन सुमन खिले, खुशहाली आयी।
खेतों में हरियाली घर-घर, दीवाली आयी।।
विमल मंत्र का जाप सुमरते, प्रतिपल संवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।1।।

कौन कहाँ पर कब तक कैसे, कितना दुखी हुआ।
विमल कृपा का पात्र बना तब, तत्क्षण सुखी हुआ।।
तुम दुखियों के दुःख निवारक, सिद्ध मंत्र सम हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।2।।

कौन कहाँ से प्रश्न पूछने, कब-कब आयेगा।
कैसा-कैसा समाधान पा, मन हरषायेगा।।
शंकाओं के समाधन तुम, अनुपम उत्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।3।।

बना चौपड़ा कुण्ड जिनालय गुरु आशीष तले।
तीस चौबीसी भव्य जिनालय, देखो भले-भले।।
विमल समाधि मन्दिर आऊँ, तीर्थ शिखर जी हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।4।।

तुमको गुरु बनाया, किनने, कितने शिष्य हुए।
परम्परा में संयम धारी, और प्रशिष्य हुए।।
उनके नामों का उल्लेखन, संयत स्वर में हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।5।।

मिला भरत भारत माता को, विमल श्रमण द्वारा।
विराग सागर गणाचार्य क्या, कुल का उजियारा।।

ऊर्जयन्त सागर जी बोले, चैत्य दरश करलो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।6।।

पुष्पदन्त जो पुष्पगिरि के, तीर्थ प्रणेता हैं।
पूज्य विमल सागर गुरुवर, दीक्षित बेटा हैं।।
स्याद्वाद माता के मुख से, आगम मुखरित हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।7।।

जन्म जयंती आयी गुरु की, श्री गुरुवर बोले।
शास्त्र प्रकाशित करो पचहत्तर शुभ रहस्य खोले।।
पूर्वाचार्यों का जैनागम, हर घर मन्दिर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो।।8।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विमलसागर मुनिवरेभ्यो जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कटें संकट मिटें, प्रकटे विभव विवेक।
विमल चरण नित पूजिए, चरणों माथा टेक।।

।। पुष्पांजलि।।

तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज
आचार्य विभवसागर जी को आशीर्वाद देते हुए

तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी

गुरु पूजा

आह्वानन

सन्मति सागर! सन्मति सागर! सन्मति सागर जी।
नमोस्तु गुरुवर! नमोस्तु गुरुवर! नमोस्तु गुरुवर जी।।
सन्मति दाता, सन्मति दे दो, सन्मति सागर जी।
मन मन्दिर में आन पधारो, सन्मति सागर जी।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तेरा मन गंगा से निर्मल, ज्ञान लहर वाला।
नय-प्रमाण की उठें तरंगे, जिन आगम वाला।।
जल से उज्ज्वल चित्त बना दो, मेरे गुरुवर हो।
मेरा अंतिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आये सन्मति युग आया, सर्वोदय कारी।
ओम् प्रकाशक पाप विनाशक, सब जग हितकारी।।
चंदन सा महका दो जीवन, तप चारित धर हो।
मेरा अंतिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय आतम द्रव्य तुम्हारा, अक्षय गुण वाला।
अक्षय पद की करे साधना, अक्षय धन वाला।।
अक्षय सुख के द्वार खोल दो, सब दुख क्षय कर दो।
मेरा अंतिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल चढ़ाऊँ मैं श्रद्धा के, फूल नहीं जाऊँ।
तेरे चरणों की उपासना, भूल नहीं जाऊँ।।
आत्म गुणों का सौरभ महके, भीतर–बाहर हो।
मेरा अंतिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू लाऊँ, बर्फी लाऊँ, घेवर लाऊँ जी।
मीठे–मीठे महा मनोहर, व्यंजन लाऊँ जी।
हे सम्राट तपस्वी गुरुवर! छुधा रोग हर दो।
मेरा अंतिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाऊँ, आरति गाऊँ, अपने गुरुवर की।
मोह तिमिर को दूर भगाओ, सन्मति गुरुवर जी।।
ज्ञान प्रकाशक, मोह विनाशक, मोह तिमिर हर दो।
मेरा अंतिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अनल में कर्म जलाऊँ, सन्मति गुरु ध्याके।
परम सुगंधित गुण महकाऊँ, धूप जलाकर के।।
सर्व सुगन्धित जीवन मेरा, धूप जलाकर हो।
मेरा अंतिम–मरण–समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलदाता गुरुवर के चरणों, श्रीफल हम लाये।
सेव-संतरा अनार केला, थाली सजवाये।।
मोक्ष महाफल देने वाले, सन्मति गुरुवर हो।
मेरा अंतिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

महातपस्वी! सदा यशस्वी! सन्मति सागर जी।
महा मनस्वी! महामुनीश्वर! सन्मति सागर जी।।
अर्घ चढ़ाऊँ, चरणों आकर, अपने गुरुवर को।
मेरा अंतिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

भाग्य बदलते आप हो, कहे खमेरा ग्राम।
भाग्य विधाता आप हो, कहे कुंजवन धाम।।1।।
तुमको पाकर हो गये, प्यारेलाल निहाल।
जयमाला के पुत्र की, गाऊँ मैं जयमाल।।2।।

चौपाई

प्यारा भारत देश कहाया, उत्तर प्रान्त सदा मन भाया।
एटा जिला सदा मनहारी, ग्राम फफोतु जग उपकारी।।1।।

माघ सुदी साते तिथि आयी, जन्मोत्सव की खुशियाँ लायी।
घर–आँगन किलकारी गूँजी, प्यारेलाल की चेतन पूँजी।।2।।

पुण्य पुत्र का दर्शन पाया, जग जनता का मन हर्षाया।
लाड़ू, पेढ़ा, बूँदी, केला, बाँटें द्वारे लगा है मेला।।3।।

प्यारे लाल करें धन वर्षा, माता देखे हर्षा–हर्षा।
ओम् ओम् कह माता बोली, और तिजोरी फिर–फिर खोली।।4।।

ओम् प्रकाश नाम यह प्यारा, मिलकर सबने ही उच्चारा।
सरल विनीत उदार मनस्वी, बाल्यकाल से थे तेजस्वी।।5।।

परम्परा से जो चल आया, कुलाचार वह तुमने पाया।
कुलाचार में सदाचार था, सदाचार में जिनाचार था।।6।।

जिन मंदिर के दर्शन करना, रात्रि भोजन कभी न करना।
पानी सदा छना ही पीना, जिओ और जीने दो जीना।।7।।

महावीर कीर्ति गुरु आये, दर्शन पा वैराग्य जगाये।
ब्रह्मचर्य व्रत उनसे लीना, नमक त्याग तब ही कर दीना।।8।।

वात्सल्य रत्नाकर आये, विमल सूरि शुभ नाम कहाये।
क्षुल्लक दीक्षा के व्रत धारे, दही, तेल, घी तज रस सारे।।9।।

मुनिवर दीक्षा तुमने लीनी, तत्क्षण शक्कर भी तज दीनी।
अन्न, चटाई को भी त्यागा, दूध त्यागकर मट्ठा राखा।।10।।

महावीर कीर्ति गुरु प्यारे, शिक्षा गुरु थे जग में न्यारे।
अष्टादश भाषी कहलाये, शिक्षा कौशल उनसे पाये।11।।

चतुर्थकाल सम आप तपस्वी, मेरा वन्दन महामनस्वी।
महावीर कीर्ति पद आये, सूरि पद सूरि से पाये।।12।।

आदि सागर अंकली वाले, परम्परा के तुम रखवाले।
तृतीय पट्टाधीश कहाये, तप सम्राट तुम्हें जग गाये।।13।।

सिंह सम आप विचरने वाले, सिंह निष्क्रीडित करने वाले।
नि:शंक निर्भय सदा विचरते, मूलाचार सदा आचरते।।14।।

समता ताला कभी न टूटे, महाधैर्य का बाँध न फूँटे।
कभी गुरु का साथ न छूटे, संघ चतुर्विध कभी न रुठे।।15।।

अपना लोटा छानो प्यारे, शिक्षा गुरु ने वचन उचारे।
बेटा! किसी नगर में जाना, पहले प्रवचन वहाँ सुनाना।।16।।

प्रवचन करना महा तपस्या, दूर करेगा सभी समस्या।
पहले करना आत्म साधना, पीछे होगी जिन प्रभावना।।17।।

वचन सिद्धि को तुम पाओगे, महातपस्वी कहलाओगे।
दीक्षा देकर अपना करना, शिक्षा देकर उपकृत करना।।18।।

वात्सल्य से तुम समझाना, शिष्यगणों को नित सम्हालना।
श्री गुरुवर की ये शिक्षायें, सफल करें सारी दीक्षायें।।19।।

और कौन है तुम सा त्यागी, और कौन तुम सा वैरागी।
महातपस्वी सन्मति सागर! जय जय जय गुरु सन्मति सागर।।20।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी तपस्वी सम्राट सन्मतिसागर मुनिवरेभ्यो जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सन्मति बाबा आप हो, सन्मति दाता आप।
सन्मति सागर नाम का, करूँ निरन्तर जाप।।
सन्मति दाता सन्त का, सन्मति सागर नाम।
दे दो बाबा सन्मति, बारम्बार प्रणाम।।

।। इति जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

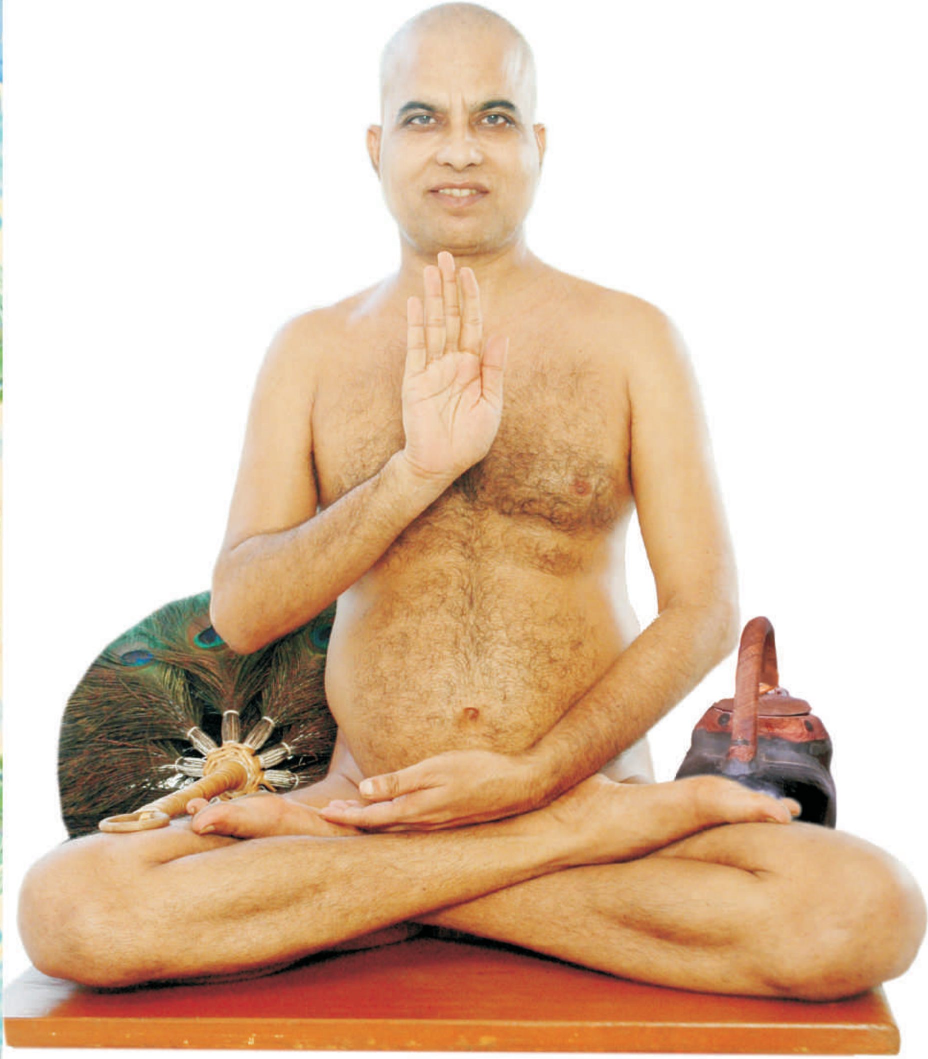

प.पू. महाकवि गणाचार्य

श्री 108 विरागसागर जी महाराज

राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी
गुरु पूजा

आह्वानन्

गुरु आराधन ही शिष्यों के, जीवन का प्रथम महोत्सव है।
अब शिष्य साधना को समझो, प्रारम्भ हुआ शुभ उत्सव है।।
मेरा प्रसन्न मन बुला रहा, गुरुदेव! हृदय में आ जाओ।
स्वीकारो नम्र निवेदन यह, शिष्यत्व शिष्य में प्रकटाओ।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं आचार्य विरागसागर मुनिवर अत्र अवतर-अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गुरुदेव आपसे शिष्यों की, वह कौन बात अंजानी है।
क्या सागर को मालूम नहीं, किस बूँद में कितना पानी है।।
नभ के समान ज्यों नभ होता, गुरु के समान त्यों गुरु होते।
जिनके प्रश्नों में उत्तर हैं, उत्तर में प्रश्न छुपे होते।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुशासन प्रिय! अनुशासक से, वात्सल्यमयी अनुशासन पा।
अनुशासन भी अनुशासित है, अनुशास्ता का अनुशासन गा।।
जिन शासन में अनुशासन का, जैसा महत्त्व दर्शाया है।
वैसा अनुशासन दिखा-सिखा, सब संघ आज हर्षाया है।।
ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग विजेता! गुरुवर से, यह प्रथम सर्ग मैंने सीखा।
समता सन्तों का जीवन है, इसका प्रयोग गुरु में देखा।।
जब सारा जग था काँप उठा, पर आप ध्यान में निश्चल थे।
तब मिला साधुता का परिचय, जब उपसर्गों में अविचल थे।।
ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की सन्निधि में आते ही, दुर्मति-दुर्गति दुर्भाव टलें।
उपदेश बिना ही गुरुवर के, सन्मति सद्गति, सद्भाव पलें।।
गुरु का निमित्त पाते ही जो, फलितार्थ स्वयं हो जाती है।
दीक्षा तो आत्म समर्पण है, गुरु से दीक्षा ली जाती है।।
ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु शिष्य सदा शोभित होते, अन्तर के निर्मल भावों से
उनकी महिमा जग मत मापे, बाहर के अन्य उपायों से।।
वचनामृत में कल्याण भरा, अतएव प्रेम से पिला रहे।
अमृत की बूँदे, पिला–पिला, अमृत सागर में मिला रहे।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

माना गुरु के बिन हे भव्यो! बहुशब्द ज्ञान मिला सकता है।
पर उज्ज्वल दृष्टि पाने को, सद्गुरु की आवश्यकता है।।
गुरु के अगणित उपकारों को, क्या कोई शिष्य भुला सकता।
सौ जन्म धरा पर लेकर भी, ना वह उपकार चुका सकता।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

इक जीवन में सौ–सौ शिक्षक भी, सहज–सुलभ हो सकते हैं।
सौ जन्म मात्र ले लेने से, सौ माताएँ पा सकते हैं।।
जब पुण्य सहस्त्रों जन्मों का, इक साथ उदय में आता है।
तब कहीं किसी को सद्गुरु का, दुर्लभ दर्शन मिल पाता है।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निस्पृही संत की निस्पृहता, देखो तो कितनी अनुपम है।
जिनके शिष्यों की माला में, आचार्य सुमन हृदयंगम हैं।।
गुरु शिष्यों का सम्बन्ध मधुर, अत्यन्त पवित्र हुआ करता।
गुरु भक्ति यहाँ उमड़ा करती, वात्सल्य वहाँ उमड़ा करता।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

जिनदेव परम उपकारी हैं, जिनशास्त्र परम उपकारी हैं।
पर गुरु की महिमा क्या गाये, जो इन दोनों से भारी है।।
गुरु से प्रायश्चित मिलता, वात्सल्य गुरु से मिलता है।
ये दो बातें गुरु में विशेष, जिनमें प्रत्येक सफलता है।।

ज्यों माँ की गोदी शिशु बैठा, उसको भोजन की चिन्ता क्या?
त्यों शिष्य समर्पित गुरु को है, उसको भविष्य की चिन्ता क्या?
जब एक अचेतन प्रतिमा को, मंत्रों से पूज्य बना लेते।।
तब उनकी महिमा क्या गायें, जो निज सम हमें बना लेते।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

विश्व विभव इक ओर हो, गुरु कृपा इक ओर।
विश्व विभव ठुकराय कर, आऊँ गुरु के दोर।।1।।
जो कुछ पाया आपसे, मानूँ अपना भाग्य।
गुरुछाया में नित पलूँ, मिले यही सौभाग्य।।2।।

गुरु जो करते वह नहीं करूँ, गुरु जो कहते वह किया करूँ।
गुरु जाप जपूँ, गुरु नाम भजूँ, गुरु के चिंतन में जिया करूँ।।
गुरु की कठोरता औषधि है, जो सब शिष्यों को हितकर है।
यदि डाट और फटकार मिले, तो भी पूजा से बढ़कर है।।1।।

जो मानव पहले भक्त बने, पश्चात् शिष्य बन सकता है।
ज्यों तरु में पहले फूल खिलें, पीछे उसमें फल फलता है।।
शिष्यत्व बिना गुरु का दर्शन, चरितार्थ कभी क्या हो सकता।
पर आत्मसमर्पण किये बिना, शिष्यत्व कभी क्या हो सकता।।2।।

विश्वास बनाये रखने को, गुरु आज्ञा का सम्मान करूँ।
गुरु आज्ञा अनुशासन में रह, सद् शिष्य बनूँ कल्याण करूँ।।

माना गुरुवर प्रतिकूल हुए, तब भी श्रद्धा को मत छोड़ूँ।
होगा कल्याण उन्हीं चरणों, अतएव हाथ दोनों जोड़ूँ।।3।।

कुछ लोग कहा करते ऐसा, गुरु का वियोग ना सह सकता।
पर मैं कहता हूँ शिष्यों को, गुरु का वियोग ना हो सकता।।
गुरु संघ शरण में क्यों रहना? यदि ऐसा प्रश्न उठाओगे।
तो प्रेमपूर्ण अनुशासन ही, इस समाधान में पाओगे।।4।।

गौतम गणधर के गुरु छूटे, फिर भी उनका निर्वाण हुआ।
गुरुभक्तिहीन मारीची का, नहीं युगों-युगों कल्याण हुआ।।
अतएव कथन से सिद्ध हुआ, गुरु छूटे मुक्ति संभव है।
गुरु भक्ति भाव छूटे जिसका, उसका कल्याण असंभव है।।5।।

गुरुदेव न इतने कोमल हों, कि शिष्य कहीं उदण्ड बने।
इतने कठोर भी नहीं रहें, काँपे सुशिष्य भयभीत बने।।
सद्गुरु भी तब तक गुरुवर है, जौलौं गुरुत्व संरक्षित है।
सद्शिष्य तभी तक शिष्य रहे, जौलों शिष्यत्व सुरक्षित है।।6।।

गुरुदेव परीक्षा प्रथम करें, फिर दीक्षा शिक्षा क्रमशः दें।
जो भवभीरु वैराग्यवान, उनको ही अपनी शरणा लें।।
गुरु शरणार्थी को शरण बना, मंगल उत्तमय बना रहे।
गुरु का चरित्र कितना विचित्र, आतम परमातम बना रहे।।7।।

यदि सभा मध्य गुरु डाँट मिले, फटकार या प्रायश्चित।
मेरे तरने का यह उपाय, होगा इतना समझूँ निश्चित।।
अपराध बिना यदि दण्ड मिले, तब सोचूँ कर्ज पुराना था।
जो आज नहीं तो कल निश्चित, इस विधि ही मुझे चुकाना था।।8।।

जो शिष्य स्वतः अपने गुरु को, साधारण मनुज समझता है।
मानो दुर्गति में जाने का, लक्षण पहले से दिखता है।।
एकाक्षर ज्ञान प्रदाता को, जो शिष्य भूलता पापी है।
फिर गुरु को ही जो भूल रहा, वह शिष्य नहीं महापापी है।।9।।

जिनका चिंतन मंगलकारी, ऐसे गुरु जिनके शुभ चिन्तक।
तब उनको चिंता क्या करना, जो शिष्य स्वयं आज्ञापालक।।
जो बिना प्रदर्शन किए हुए, अपने गुरु को भजता रहता।
सत्यार्थ समर्पण उसका है, जो गुरु श्रद्धा उर में धरता।।10।।

गुरु सेवा के लक्षण जिनमें, उनमें सारे शुभ लक्षण हैं।
ये चन्द्रगुप्त से गुरु सेवक, धरती पर शिष्य विलक्षण हैं।।
जो शिष्य स्वयं शिशुवत रहके, अपने दोषों को बतलाता।
वह निश्छलता के बल पर ही, निज में भगवत्ता प्रकटाता।।11।।

सब सुख साधन से दूर-दूर, बस स्वात्म साधना करते हो।
तुम राग द्वेष से दूर हुए, शुद्धात्म भावना भरते हो।।

स्वाध्याय ध्यान में पारायण, गुरु स्वपर हितैषी तप रत हो।
वैराग्यवान हे ज्ञानवान, आरम्भ परिग्रह उपरत हो।।12।।

गुरुदेव आपके दर्शन से, मन के विकार भग जाते हैं।
गुरुचरण शरण में रहने से, सौभाग्य स्वयं जग जाते हैं।।
उन गुरुवर की पूजा अर्चा, हम भक्तिभाव से करते हैं।
गुरु सेवा और प्रशंसा जो, निःस्वार्थ भाव से करते हैं।।13।।

यह साधारण परिणमन क्रिया, अपने-अपने में होती है।
पर रत्नत्रय परिणमन क्रिया, गुरुदेव आपसे होती है।।
जब कारण ही सामान्य मिले, तब उपादान सामान्य जगा।
जब कारण आप विशेष मिले, तब उपादान असामान्य जगा।।14।।

चैतन्य तीर्थ गुरु पदरज पा, जड़ पुद्गल भी सत्तीर्थ बनें।
जो शिष्य समर्पित तुम्हें मिले, वे ही रत्नत्रय तीर्थ बनें।।
कंटक राहे निष्कंटक हों, सुमनावलियों से भर जातीं।
वात्सल्य वृक्ष छाँव मिले, जंगल में मंगल कर जातीं।।15।।

यह पूजा नहीं पिपासा है, निज श्रद्धा की परिभाषा है।
यह गुरुकुल के ही कुल गौरव, आदर्श शिष्य की भाषा है।।
भाषा में भाव समर्पण है, वैसा ही जीवन अर्पण है।
गुरुदेव आपकी यह पूजा, शिष्यों को उज्ज्वल दर्पण है।।16।।

दोहा

रहूँ गुरु के संघ में, रखूँ गुरु का ध्यान।
गुरुसेवा तौं लौं करूँ, जौं लौं हो निर्वाण।।1।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला पूर्णार्घम् निर्वपामीति स्वाहा

राग आग में ना जलूँ, चलूँ सदा गुरु छाँव।
भवसागर से तारने, गुरु विराग ही नाव।12।।

पुष्पांजलिम् क्षिपेत्

राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी

गुरु पूजा

मेरे इस चेतन मंदिर के, हे चैतन्य प्रभु ।
मेरे जिनवर! मेरे गणधर! मेरे परम गुरु ॥
रहो विराजे हृदय कमल पर, गुरुवर तुम ऐसे।
जैसे श्रद्धा समागयी हो, आतम में वैसे॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवर! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गुरु श्रद्धा संयम से प्राणी, भवसागर तिरता।
वचनामृत की सर्वौषधि पा, जन्म-मरण हरता॥
गंगा जल गंधोदक बनता, गुरु चरणा छूके।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

चंदन मन वन्दन को आया, भाव सुगन्धी ले।
श्रमण वाटिका को महकाया, परम सन्निधि दे॥
भव्यों के भवताप मिटाते, चारित चंदन से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चन्दनम निर्वपामिति स्वाहा।

धवल-धवल अक्षत ले आया, धवल भावनायें।
अक्षत सा उज्ज्वल हो जीवन, धवल साधनायें॥
अक्षय पद गुरुदेव दिलायें, रत्नत्रय पद से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामिति स्वाहा।

अन्तर्मन यह सुमन बनाया, गुरुवरजी तुमने।
सुमन भाव से सुमन संजोया, गुरुवर जी हमने॥
महक रहे हैं शिष्य आपके, निज विरागता से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

मैं रोगी हूँ आप वैद्य हो, चर्या औषधि है।
सर्व रोग के नाश करन को, श्रुत परमौषधि है॥
शिष्य शोभते गुरुवर तुमसे, ज्यों अक्षर स्वर से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ज्ञान सुधारस मुझे पिलाया, प्रवचन प्याली से।
ज्ञानदीप जल रहे हृदय में, आज दिवाली से॥

ज्योतिर्मय जीवन रहता है, गुरु पद दीपक से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्वूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

जीव जुदा है कर्म जुदा है, दिव्य दृष्टि ऐसी।
एकमेक हो रहे सदा से, मोह सृष्टि कैसी॥
भेदज्ञान कौशल सिखलाया, उपदेशामृत से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्वूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

नर तन का फल व्रत धारण है, वह फल मुझे फले।
गुरुपूजा ही मुझको देगी, यह फल भले-भले॥
सदा सफलता देने वाले, आत्म साधना से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्वूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामिति स्वाहा।

गुरुवर गणधर देव हमारे, गुरु तीर्थंकर हो।
गुरु आदीश्वर महावीर हो, गुरु क्षेमंकर हो॥

दो अनर्घ्य पद गुरुवर मेरे, शुद्ध चेतना से।
मेरे गुरुवर परम दिगम्बर, धरती पर ऐसे॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जयमाला गुरुदेव की, सम्यग्दर्शन माल।
ज्ञान चरित तप माल यह, सर्वोत्तम गुणमाल॥

गुरुवर गणधर देव हैं, गुरु तीर्थंकर देव।
गुरुवर ही श्रुतदेव हैं, जय जय जय गुरुदेव॥ 1॥
गुरु आज्ञा तप त्याग है, गुरु आज्ञा वैराग्य।
गुरु आज्ञा ही शिष्य के, जीवन का सौभाग्य॥ 2॥
गुरु मिलते गुण मिल गये, गुरु मिलते श्रुतज्ञान।
गुरु मिलते ही मिल गये, भीतर में भगवान॥ 3॥
गुणदाता गुरुदेव हैं, श्रुतदाता गुरुदेव।
सुखदाता गुरुदेव हैं, शिवदाता गुरुदेव॥ 4॥
शिष्य शून्य गुरु अंक हैं, आगे-पीछे देख।
अंक बाद यदि शून्य हैं, गणना अगणित लेख॥ 5॥
अंक पास यदि शून्य हो, होता गुणित महत्त्व।
अंक रहित सौ शून्य का, व्यर्थ रहे अस्तित्त्व॥ 6॥

गुरु सेवा नवमांक हो, गुरु अक्षय गुण अंक।
गुरु कृपा मिलती रहे, मिलें पूर्ण प्राप्तांक॥ 7॥
गुरु मात गुरु तात हैं, गुरु तरुवर हम पात।
जुड़े तो शोभा पात हैं, टूटे तो गिर जात॥ 8॥
लौकिक पूजा लाभ वश, गुरु सेवा मत छोड़।
धागा पाने के लिए, रत्नहार मत तोड़॥ 9॥
गुरु पूजा कर चाह मत, लौकिक दैहिक स्वार्थ।
चंदन वन मत काटिये, कौंदो पाने अर्थ॥ 10॥
रत्न बदल मत छाँछ ले, रत्न जला मत राख।
तप बदले मत भोग ले, सीख सदा यह राख॥ 11॥
जग तज गुरु भज सीख लूँ, गुरु से आतम ज्ञान।
शिष्य बनूँ गुरुदेव का, करूँ आत्म कल्याण॥ 12॥
धन्य साधना आपकी, धन्य तपस्या त्याग।
धन्य धन्य गुरुदेव हे, दे दो विभव विराग॥ 13॥

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विरागसागर मुनिवरेभ्यो जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गुरुवर सम्यग्दर्श दो, गुरुवर सम्यग्ज्ञान।
गुरु सम्यक् चारित्र दो, गुरुवर दो निर्वाण॥ 14॥

(पुष्पाञ्जलि)

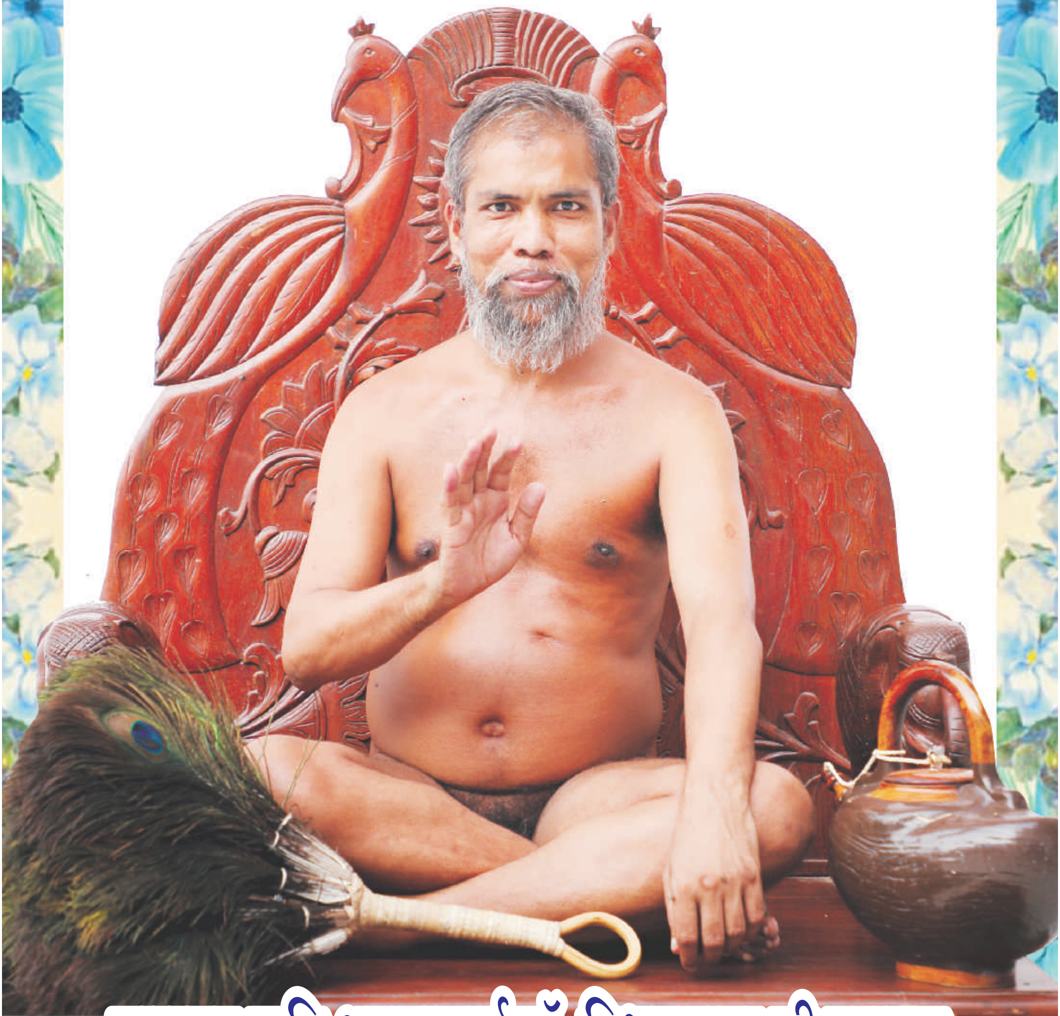

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर जी महाराज

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य श्री विभवसागर जी

पूजा

रचयिता–मुनि शुद्धोपयोगसागर

स्थापना

गुरुवर मेरे हे भगवन!,
गुरु भक्ति को आतुर मन।
आह्वानन् संस्थापन कर,
रहो विराजे हृदय कमल पर।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवर! अत्र अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल मन सम जलधारा,
कर्म नाशने पद धारा।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करो आप संताप शमन,
गुरु पद अर्पित है चंदन।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत–अक्षय पद दाता,
गुरुवर जीवन निर्माता।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो अक्षत पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धा भक्ति भाव सुमन,
गुरुवर तुमको नित अर्पण।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्य: कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्याधि यह क्षुधा कही,
जो भव–भव से सता रही।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाओ आगम का,
गुरुवर आप जिनागम का।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी महक रही,
भक्ति चिरैया चहक रही।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ ह्रूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भावों का उत्तम फल,
गुरुवर तुमको चढ़ा सुफल।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

अष्ट द्रव्य करते अर्पण,
अर्घ चढ़ा सादर वन्दन।
भक्ति भाव करते पूजा,
पूजा सम फल ना दूजा।।

ॐ हूँ णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

गुरु गुण गीता गाता हूँ।
गुरु पद शीष झुकाता हूँ।।
गणधर आप कहाते हैं।
शिवपथ हमें चलाते हैं।।1।।

आप सरल अनुशासक हैं।
आप सहज जिन भाषक हैं।।
शिष्यों को सामर्थ दिया।
सबने निज उद्धार किया।।2।।

गुरु शिक्षा औषधि देते।
सर्व रोग को हर लेते।।
ऐसे गुरु को वंदन है।
नव–प्रभात–अभिनंदन है।।3।।

श्रमण आचरण धारा है।
वात्सल्य गुण न्यारा है।।
आवश्यक को करते हैं।
अध्यापन में रहते हैं।।4।।

अध्ययन में अनुरक्त रहें।
मूलाचार प्रसक्त रहें।।
शुद्धातम में वास किया।
सिद्धातम को जान लिया।।5।।

ध्यान शुद्ध–उपयोग किया।
अर्हन् अर्हं ध्यान किया।।
ओम् मंत्र को जपते हैं।
समिति पंथ से चलते हैं।।6।।

संस्कृत भाषा सिखा रहे।
मोक्षमार्ग को दिखा रहे।।
ह्रीं राधना करते हो।
सिद्ध भक्ति में रहते हो।।7।।

रुचि ज्ञान में लगा रहे।
चाहत निज की जगा रहे।।
श्रुतज्ञानी भी बना रहे।
निज में निज को लगा रहे।।8।।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी विभवसागर मुनिवरेभ्यो जयमाला अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गुरु विभव दो आसरा, शुद्ध करो सब काम।
बना रहे उपयोग शुभ, मिले मोक्ष विश्राम।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

सर्वसाधु-आरती-1

हे गुरुवर तेरे चरणों में, हम वन्दन करने आये हैं।
हम वन्दन करने आये हैं, हम आरती करने आये हैं॥
हे गुरुवर तेरे...

तुम काम, क्रोध, मद, लोभ छोड़, निज आतम को पहिचाना है।
घर, कुटुम्ब छोड़कर निकल पड़े, धर लिया दिगम्बर बाना है॥
हे गुरुवर तेरे... ॥ 1 ॥

छोटी सी आयु में स्वामी, विषयों से मन अकुलाया है।
तप, संयम, शील, साधना में, दृढ़ अपने मन को पाया है॥
हे गुरुवर तेरे... ॥ 2 ॥

कितना भीषण संताप पड़े, हो क्षुधा-तृषा की बाधायें।
स्थिर मन से सब सहते हो, बाधाएँ कितनी आ जायें॥
हे गुरुवर तेरे... ॥ 3 ॥

नहीं ब्याह किया घर बार तजा, समता के दीप जलाये हैं।
हे महाव्रती संयमधारी, चरणों में सेवक आये हैं॥
हे गुरुवर तेरे... ॥ 4 ॥

तुम जैन धर्म के सूरज हो, तप-त्याग की अद्‌भुत मूरत हो।
है धन्य-धन्य महिमा तेरी, तम हरने वाले सूरज हो॥
हे गुरुवर तेरे... ॥ 5 ॥

शिवपुर पथ के अनुगामी का, अभिवंदन करने आये हैं।
हे गुरुवर तेरे चरणों में, हम वन्दन करने आये हैं॥

आरती-2

विभव सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।

आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ......

लखमीचंद के राजदुलारे, गुलाबबाई की आँखों के तारे।

किशनपुरा के ताज, आज थारी.........

दीपावली के दीप जलायें, जन्मोत्सव गुरुभक्त मनायें।

लेकर दीपक थाल, आज थारी........

मोराजी सागर में आये, धर्मज्ञान की शिक्षा पाये।

मिले मुनि महाराज, आज थारी.........

क्षेत्र बरासौ कितना प्यारा, जहाँ आपने मुनिपद धारा।

दीक्षा गुरु विराग, आज थारी........

नगर औरंगाबाद कहाये, पद आचार्य जहाँ पर पाये।

वीर जयंति काज, आज थारी........

भक्त तुम्हारे द्वारे आयें, नाचे गायें हर्ष मनायें।

करें आरती आज, आज थारी........

ऋद्धि मंत्र

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहिजिणाणं
3. णमो परमोहिजिणाणं
4. णमो सव्वोहिजिणाणं
5. णमो अणंतोहिजिणाणं
6. णमो कोट्ठबुद्धीणं
7. णमो बीजबुद्धीणं
8. णमो पादाणुसारीणं
9. णमो संभिण्णसोदारणं
10. णमो सयं बुद्धाणं
11. णमो पत्तेयबुद्धाणं
12. णमो बोहियबुद्धाणं
13. णमो उजुमदीणं
14. णमो विउलमदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं

19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण समणाणं
22. णमो आगास गामीणं
23. णमो आसीविसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्गतवाणं
26. णमो दित्ततवाणं
27. णमो तत्ततवाणं
28. णमो महातवाणं
29. णमो घोरतवाणं
30. णमो घोरगुणाणं
31. णमो घोरपरक्कमाणं
32. णमो घोरगुण बंभयारीणं
33. णमो आमोसहिपत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहिपत्ताणं
35. णमो जल्लोसहिपत्ताणं
36. णमो विठ्ठोसहिपत्ताणं

37. णमो सव्वोसहिपत्ताणं
38. णमो मणवलीणं
39. णमो वचवलीणं
40. णमो कायवलीणं
41. णमो खीरसवीणं
42. णमो सप्पिसवीणं
43. णमो महुरसवीणं
44. णमो अमिइसवीणं
45. णमो आक्खीणहाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसस्स।।

वर्द्धमान मंत्र

ॐ णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जुए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान–मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

***

आचार्य शांतिधारा

* ॐ नम: सूरिभ्य: ।ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं।।
* ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत गुणमण्डित सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं द्वादश तपमण्डित सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं दश धर्म मण्डित सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं पंचाचार प्रपालक सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व सूरिभ्यो नम:। सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं षड्आवश्यक पालक सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं त्रय गुप्ति धारक सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं अनशनतपधारक सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं अवमौदर्य धारक सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं वृत्तिपरिसंख्यान तपधारक सर्व सूरिभ्यो नम: सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

* ॐ ह्रूं रस परित्याग तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं विविक्त शय्यासन तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं कायक्लेश तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं प्रायश्चित्त तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं विनय तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं वैयावृत्य तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं व्युत्सर्ग तप धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं स्वाध्याय तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं ध्यान तपधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम क्षमा धर्मधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम मार्दव धर्मधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

* ॐ ह्रूं उत्तम आजर्व धर्मधारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम शौच धर्म धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम सत्य धर्म धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम संयम धर्म धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम तप धर्म धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम त्याग धर्म धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम आकिंचन्य धर्म धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं दर्शनाचार मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं ज्ञानाचार मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं चारित्राचार मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

* ॐ ह्रूं तपाचार मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं वीर्याचार मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं समता आवश्यक कर्त्तव्य मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं स्तव आवश्यक कर्त्तव्य मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं वंदना आवश्यक कर्त्तव्य मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं प्रतिक्रमण आवश्यक कर्त्तव्य मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं प्रत्याख्यान आवश्यक कर्त्तव्य मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं कायोत्सर्ग आवश्यक कर्त्तव्य मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं मन गुप्ति मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं वचन गुप्ति मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
* ॐ ह्रूं काय गुप्ति मूलगुण धारक सर्व सूरिभ्यो नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

- ॐ ह्रूं अंकलीकर आचार्य आदिसागर सूरिभ्यो नमः।
- ॐ ह्रूं तीर्थभक्त शिरोमणि आचार्य महावीरकीर्ति सूरिभ्यो नमः।
- ॐ ह्रूं वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर सूरिभ्यो नमः।
- ॐ ह्रूं तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मति सागर सूरिभ्यो नमः।
- ॐ ह्रूं धर्म चक्रवर्ती गणाचार्य विरागसागर सूरिभ्यो नमः।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां,
यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः
करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्र!

इति शान्तिधारा

मुंगाणा वर्षायोग-2021

प.पू. सारस्वत कवि
आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज ससंघ

प.पू. सारस्वत कवि
आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज

श्रमण श्री विभास्वरसागर जी

श्रमण श्री आवश्यकसागर जी

श्रमण श्री शुद्धात्मसागर जी

श्रमण श्री सिद्धात्मसागर जी

श्रमण श्री शुद्धोपयोगसागर जी

श्रमणी ओम्श्री माताजी

श्रमणी समितिश्री माताजी

क्षुल्लिका संस्तुतिश्री माताजी

क्षुल्लिका अद्योम्श्री माताजी

पुण्यार्जक

स्व. श्री सुभाषचन्द्र जी भुवारिया

की प्रथम पुण्य तिथि पर

श्रीमती चंदा देवी (धर्मपत्नी)

अभय-अनिता, अरविन्द-लीना, राजेश-रीना (पुत्र-पुत्रवधु)

रौनक, दिव्यांश, शाक्षी, पूरवी, हीम,

रीया, सोमिया (पौत्र-पौत्री)

समस्त भुवारिया परिवार, मुंगाणा

चेतन जी-मोनिका सरिया (पुत्री-दामाद)

इशिता, परी, ग्रंथ (दोहिता-दोहिती)

स्व. श्री कुमकुमदेवी

की प्रथम पुण्य तिथि पर

चिमनलाल (पति)

मुकेश कुमार-प्रियंका, नितेश कुमार-उर्मिला (पुत्र-पुत्रवधु)

मानव, जैनी, अक्षरा, हिमांशी (पौत्र-पौत्री)

पुण्यार्जक

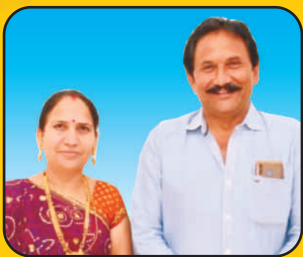

श्री दिनेश जी श्रीमती विजयश्री देवी
रिंकित–सोनम, मंयक–सलोनी दोषी (पुत्र–पुत्रवधु)
मुंगाणा

श्री भरत कुमार भाई कन्हैयालाल
शान्तिलाल जी पचोरी
मुंगाणा

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, किशनपोल, जयपुर मो. 8290526049, 8619727900